Nai Dunia (Indore), 14th July 2024, Page-01

भविष्य

आइआइटी इंदौर के दीक्षा समारोह में बोले इसरो के पूर्व निदेशक के. सिवन

2035 तक भारत का अपना स्पेस स्टेशन होगा

नईदुनिया प्रतिनिधि, इंदौरः इंडियन स्पेस रिसर्च आर्गेनाइजेशन (इसरो) के पूर्व निदेशक व भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) इंदौर के बोर्ड आफ गवर्नर्स के चेयरमैन डा. के. सिवन ने कहा कि चंद्रयान की सफलता के बाद स्पेस रिसर्च के क्षेत्र में भारत को सम्मान की दृष्टि से देखा जाने लगा है। इन दिनों इसरो कई बड़े प्रोजेक्ट पर एक साथ काम कर रहा है। इसी कड़ी में अंतरिक्ष में भारत अपना स्पेस स्टेशन बनाने जा रहा है। इस प्रोजेक्ट को 2035 तक पूरा करना है। इसका मुख्य उद्देश्य अंतरिक्ष से जुड़ी जानकारी प्राप्त करना है। प्रोजेक्ट के लिए केंद्रीय स्तरीय समिति बनी है। इसका नेतृत्व प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कर रहे हैं। इस अति महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट के लिए अलग से बजट भी मंजूर किया गया है।

2040

तक चांद पर उतारेगा मनुष्य

चांद पर मिट्टी-पत्थर और पानी व हवा के बारे जानकारी जुटाएंगे

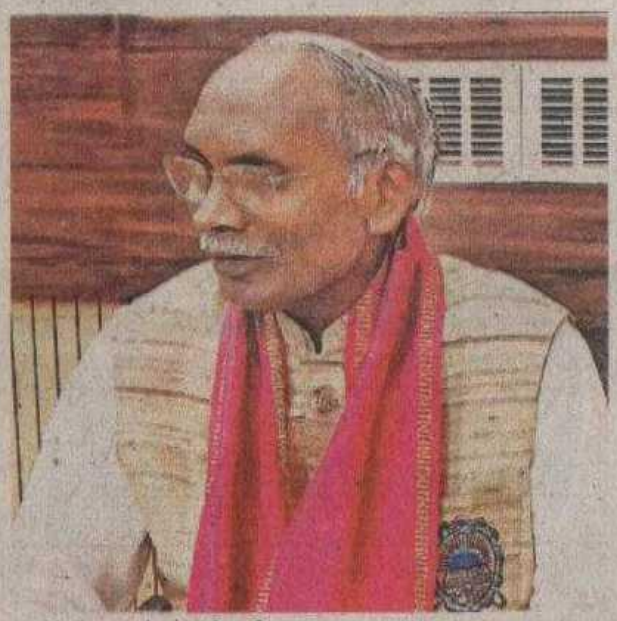

इसरो के डायरेक्टर के. सिवन। ● नईदुनिया

डाटा कर रहे शेयर

इसरो के पूर्व निदेशक के. सिवन ने कहा कि आइआइटी-इंदौर से मेरे जुड़ने से पहले ही संस्थान ने स्पेस साइंस में कई अच्छे प्रोग्राम चला रखे हैं। चंद्रयान की मदद से मिलने वाली जानकारी भी संस्थान में शोध करने वाले विद्यार्थियों के साथ साझा की जा रही है। कुछ नए प्रोग्राम दोनों संस्थान मिलकर डिजाइन कर रहे हैं, जिससे एस्ट्रोनामी-एस्ट्रोफिजिक्स स्पेस इंजीनियरिंग करने वाले विद्यार्थियों को शोध करने में आसानी होगी। चंद्रमा की सतह पर मिट्टी-पत्थर के बारे में डाटा देंगे।

के. सिवन ने कहा कि चंद्रयान-3 ने काम करना शुरू कर दिया है, जो चंद्रमा की सतह से भौतिक वस्तुओं के बारे में जानकारियों को एकत्रित करने में मदद कर रहा है। वहां से कुछ नमूनों को प्राप्त किया है, जो साइंस इंवेस्टिगेशन करने में सहायक होगा। चंद्रमा की सतह पर मिट्टी-पत्थर और पानी व हवा के बारे में पता लगाया जाएगा। 2040 तक भारत ने चंद्रमा पर मनुष्य को भेजने का लक्ष्य रखा है।

उन्होंने कहा कि सोलर मिशन के रूप में आदित्य एल-1 महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट है, जो सूर्य की नजदीकी एक कक्षा से अध्ययन कर जानकारी देगा। वह बताते हैं कि चंद्रयान की सफलता के बाद अंतरिक्ष के जुड़े रहस्यों का पता लगाने के लिए अन्य स्पेस एजेंसी भी इसरो के साथ मिलकर काम करने की इच्छा जता चुकी है। कई प्रोजेक्ट पर अलग-अलग एजेंसी जुड़ी भी हैं।